फणीश्वरनाथ 'रेणु'

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» फणीश्वरनाथ 'रेणु' का साहित्यिक परिचय

प्रश्न 1 (आसान). फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म किस राज्य में हुआ था?
उत्तर – बिहार

प्रश्न 2 (आसान). उन्होंने किस वर्ष साहित्य-सृजन के क्षेत्र में प्रवेश किया?
उत्तर – 1953

प्रश्न 3 (मध्यम). रेणु जी की विचारधारा कैसी थी और इसका उनके साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?
उत्तर – उनकी विचारधारा प्रगतिशील थी, जिसका अर्थ है कि वे समाज में बदलाव और विकास के पक्षधर थे। इसी वजह से उनके साहित्य में गाँव, गरीब और पिछड़े लोगों की समस्याओं और उनके जीवन का यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

प्रश्न 4 (कठिन). भारत छोड़ो आंदोलन और नेपाल के राणाशाही विरोधी आंदोलन में रेणु जी की सक्रिय भूमिका उनके व्यक्तित्व के किस पहलू को दर्शाती है?
उत्तर – यह उनके देशभक्त, जागरूक और न्यायप्रिय होने के पहलू को दर्शाती है। वे सिर्फ़ लेखक ही नहीं, बल्कि एक सामाजिक कार्यकर्ता और क्रांतिकारी भी थे, जो अन्याय के ख़िलाफ़ खड़े होने में विश्वास रखते थे।

» आंचलिक कथाकार और रेणु की लेखन शैली

प्रश्न 5 (आसान). फणीश्वरनाथ 'रेणु' को मुख्य रूप से किस प्रकार के कथाकार के रूप में जाना जाता है?
उत्तर – आंचलिक कथाकार

प्रश्न 6 (आसान). 'अंचल' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – कोई विशेष क्षेत्र या इलाका

प्रश्न 7 (मध्यम). रेणु जी की लेखन शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताएँ जो उन्हें आंचलिक कथाकार बनाती हैं।
उत्तर – स्थानीय शब्दावली और मुहावरों का प्रयोग; ग्रामीण जीवन और वातावरण का सजीव चित्रण।

प्रश्न 8 (कठिन). एक आंचलिक कथाकार और एक सामान्य ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाले कथाकार में क्या मुख्य अंतर होता है?
उत्तर – आंचलिक कथाकार सिर्फ ग्रामीण जीवन का चित्रण नहीं करता, बल्कि वह किसी 'विशेष अंचल' की पहचान, भाषा, रीति-रिवाज और संस्कृति को इतनी गहराई से उतारता है कि वह उस अंचल की 'आत्मा' को ही व्यक्त करता है।

» रेणु की प्रमुख रचनाएँ और उनकी विरासत

प्रश्न 9 (आसान). फणीश्वरनाथ 'रेणु' का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास कौन सा है?
उत्तर – मैला आँचल

प्रश्न 10 (आसान). 'ठुमरी' और 'अगिनखोर' क्या हैं?
उत्तर – फणीश्वरनाथ 'रेणु' के कहानी-संग्रह

प्रश्न 11 (मध्यम). रेणु ने प्रेमचंद की विरासत को कैसे नई पहचान दी?
उत्तर – रेणु ने अपनी आंचलिक कहानियों और उपन्यासों के ज़रिए ग्रामीण जीवन, स्थानीय भाषा और संस्कृति का सजीव चित्रण कर प्रेमचंद की जनवादी लेखन परंपरा को आगे बढ़ाया और उसे एक नई आधुनिक भंगिमा प्रदान की।

प्रश्न 12 (कठिन). रेणु के लेखन की कौन सी विशेषताएँ उन्हें प्रेमचंद से अलग करती हैं, पर उनकी विरासत को ही आगे बढ़ाती हैं?
उत्तर – रेणु की सबसे बड़ी विशेषता उनकी 'आंचलिकता' है, जहाँ वे एक विशेष अंचल (जैसे बिहार के ग्रामीण इलाके) के जन-जीवन, भाषा, संस्कृति और समस्याओं को अत्यधिक बारीकी से और जीवंतता से प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद ने भी ग्रामीण जीवन लिखा, पर रेणु ने स्थानीय बोली और मुहावरों का प्रयोग कर उसे और अधिक प्रामाणिक और मर्मस्पर्शी बनाया, जिससे प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा को एक नया आयाम मिला।

» 'संवदिया' कहानी का केंद्रीय भाव

प्रश्न 13 (आसान). 'संवदिया' कहानी में संदेश ले जाने वाले व्यक्ति को क्या कहते हैं?
उत्तर – संवदिया

प्रश्न 14 (आसान). कहानी की मुख्य नारी पात्र का नाम क्या है?
उत्तर – बड़ी बहुरिया

प्रश्न 15 (मध्यम). रेणु जी को 'आत्मा के शिल्पी' क्यों कहा जाता है, इस कहानी के संदर्भ में समझाओ।
उत्तर – इस कहानी में रेणु जी ने बड़ी बहुरिया के आंतरिक दुख और करुणा को इतने सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है कि मानो उन्होंने आत्मा के भावों को मूर्तरूप दे दिया हो, इसीलिए उन्हें 'आत्मा के शिल्पी' कहा जाता है।

प्रश्न 16 (कठिन). 'संवदिया' कहानी आज के समय में मानवीय संवेदना के महत्व को कैसे दर्शाती है, जबकि संवाद के कई आधुनिक साधन उपलब्ध हैं?
उत्तर – आज संवाद के साधन भले ही बहुत हों, लेकिन 'संवदिया' कहानी सिखाती है कि सच्चा संवाद केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि भावनाओं और संवेदनाओं को समझना है। बड़ी बहुरिया का दुख आज भी प्रासंगिक है क्योंकि तकनीक भले ही हमें जोड़ दे, लेकिन अकेलापन और भावनात्मक उपेक्षा आज भी समाज में मौजूद है, जिसके लिए गहरे मानवीय जुड़ाव की ज़रूरत है।

» संवदिया हरगोबिन और उसके कार्य की अवधारणा

प्रश्न 17 (आसान). संवदिया का मुख्य कार्य क्या था?
उत्तर – संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना।

प्रश्न 18 (आसान). गाँववाले संवदिया को किस नज़र से देखते थे?
उत्तर – निठल्ला और कामचोर।

प्रश्न 19 (मध्यम). हरगोबिन को 'भावनाओं का पारखी' क्यों कहा जा सकता है?
उत्तर – क्योंकि वह सिर्फ संदेश नहीं पहुँचाता था, बल्कि संदेश के पीछे छिपी भावनाओं और माहौल को भी समझ लेता था।

प्रश्न 20 (कठिन). आज के युग में संवदिया की भूमिका की तुलना आप किस से करेंगे और क्यों?
उत्तर – आज के युग में संवदिया की भूमिका की तुलना 'डाकिया' या 'कूरियर बॉय' से कर सकते हैं, लेकिन मुख्य अंतर यह है कि संवदिया संदेश के मानवीय पहलू और भावनाओं को अधिक महत्व देता था, जबकि आज की सेवाएं केवल भौतिक संदेश पहुँचाती हैं। साथ ही, संवदिया गोपनीय संदेशों के लिए अधिक विश्वसनीय माना जाता था।

» बड़ी हवेली की दुर्दशा और बड़ी बहुरिया की स्थिति

प्रश्न 21 (आसान). कहानी के अनुसार, बड़ी हवेली की पहले की स्थिति कैसी थी?
उत्तर – पहले बड़ी हवेली में दिन-रात नौकर-चाकर और मजदूरों की भीड़ लगी रहती थी, चारों तरफ चहल-पहल और रौनक थी।

प्रश्न 22 (आसान). बड़ी बहुरिया अब कौन सा काम खुद कर रही थी, जो पहले नौकर करते थे?
उत्तर – वह अब खुद सूपा में अनाज लेकर फटक रही थी।

प्रश्न 23 (मध्यम). बड़ी बहुरिया के देवर गाँव छोड़कर क्यों चले गए थे?
उत्तर – बड़े भैया के निधन के बाद तीनों भाइयों ने आपस में ज़मीन-जायदाद के लिए लड़ाई-झगड़ा किया और फिर अपनी पत्नियों के कहने पर गाँव छोड़कर शहर में जा बसे।

प्रश्न 24 (कठिन). कहानी में 'द्रौपदी चीर-हरण लीला' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है और इसका क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका उल्लेख देवरों द्वारा बड़ी बहुरिया की बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बँटवारे के संदर्भ में किया गया है। इसका अर्थ है कि देवरों ने निर्दयतापूर्वक हवेली की लक्ष्मी (बड़ी बहुरिया) का अपमान किया और उसे निर्वस्त्र करने जैसा ही व्यवहार किया, जैसे द्रौपदी का चीर-हरण हुआ था। यह बड़ी बहुरिया की इज़्ज़त और मान-सम्मान के साथ हुई नाइंसाफी को दर्शाता है।

» बड़ी बहुरिया का मार्मिक संवाद

प्रश्न 25 (आसान). बड़ी बहुरिया किसके माध्यम से अपनी माँ को संदेश भेजती है?
उत्तर – हरगोबिन के माध्यम से।

प्रश्न 26 (आसान). संदेश में बड़ी बहुरिया क्या खाकर पेट पालने की बात कहती है?
उत्तर – बच्चों की जूठन खाकर।

प्रश्न 27 (मध्यम). बड़ी बहुरिया का संदेश उसके मन की किस दशा को व्यक्त करता है?
उत्तर – यह उसकी बेबसी, अपमान और जीने की इच्छा के अभाव को व्यक्त करता है।

प्रश्न 28 (कठिन). इस मार्मिक संवाद से 'संवदिया' हरगोबिन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – हरगोबिन का रोम-रोम कलपने लगता है, वह बहुत व्यथित हो जाता है और देवर-देवरानियों को 'राक्षस' कहता है। उसे लगता है कि ऐसा संदेश उसने पहले कभी नहीं पहुँचाया।

» हरगोबिन का आंतरिक द्वंद्व और संवदिया का धर्म

प्रश्न 29 (आसान). हरगोबिन को सबसे ज़्यादा कौन से शब्द चुभ रहे थे?
उत्तर – बड़ी बहुरिया के शब्द 'किसके भरोसे यहाँ रहूँगी?' और 'मैं बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँगी?' उसे कांटे की तरह चुभ रहे थे।

प्रश्न 30 (आसान). थाना बिहपुर स्टेशन पर हरगोबिन के पैर गाँव की तरफ क्यों नहीं बढ़ रहे थे?
उत्तर – क्योंकि उसे डर था कि अगर उसने संदेश सुनाया तो बड़ी बहुरिया गाँव छोड़कर चली जाएगी और गाँव की बदनामी होगी।

प्रश्न 31 (मध्यम). हरगोबिन के मन में कौन-कौन सी दो बातें आपस में टकरा रही थीं, जिनकी वजह से उसे द्वंद्व हुआ?
उत्तर – उसके मन में संवदिया का धर्म (संदेश ज्यों का त्यों पहुँचाना) और बड़ी बहुरिया के प्रति उसकी मानवीय संवेदना व गाँव के सम्मान को बचाने की इच्छा, ये दो बातें आपस में टकरा रही थीं।

प्रश्न 32 (कठिन). क्या हरगोबिन ने अपने संवदिया के धर्म का पूरी तरह पालन किया? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।
उत्तर – नहीं, हरगोबिन ने अपने संवदिया के धर्म का पूरी तरह पालन नहीं किया। हालाँकि उसका कर्तव्य था कि वह बड़ी बहुरिया का संदेश उनकी माँ तक हूबहू पहुँचाए, लेकिन अपने आंतरिक द्वंद्व और बड़ी बहुरिया के प्रति मानवीय संवेदना के कारण उसने बूढ़ी माँ से झूठ कहा कि कोई संवाद नहीं है। उसने केवल इतना कहा कि दशहरा पर बड़ी बहुरिया मेला देखने आ सकती हैं।

» हरगोबिन द्वारा संवाद न सुनाने का निर्णय और उसके कारण

प्रश्न 33 (आसान). हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की माँ को कौन-सा संदेश सुनाने से मना किया?
उत्तर – बड़ी बहुरिया के कष्ट और उनके ससुराल में हो रहे बुरे व्यवहार का संदेश।

प्रश्न 34 (आसान). हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया को किसका नाम दिया?
उत्तर – गाँव की लक्ष्मी।

प्रश्न 35 (मध्यम). हरगोबिन ने संवाद न सुनाने का निर्णय क्यों लिया? कोई दो प्रमुख कारण बताओ।
उत्तर – उसने ऐसा गाँव की इज़्ज़त बचाने के लिए और बड़ी बहुरिया के सम्मान की रक्षा के लिए किया, जिसे वो गाँव की लक्ष्मी मानता था।

प्रश्न 36 (कठिन). हरगोबिन का यह निर्णय 'संवदिया' के रूप में उसके पेशे और उसकी मानवीय संवेदना के बीच के किस संघर्ष को दर्शाता है? विस्तार से समझाओ।
उत्तर – यह निर्णय दर्शाता है कि एक संवदिया होने के नाते उसका कर्तव्य था संदेश पहुंचाना, लेकिन उसकी मानवीय संवेदना ने उसे बड़ी बहुरिया के दर्द और गाँव की इज़्ज़त को अपने कर्तव्य से ऊपर रखने के लिए प्रेरित किया। उसने अपने पेशे की 'निष्पक्षता' को छोड़कर एक भावनात्मक और नैतिक फैसला लिया, क्योंकि वह बड़ी बहुरिया के दुख को सुनकर खुद भी बहुत व्यथित था और नहीं चाहता था कि उसके गाँव की लक्ष्मी को अपमानित किया जाए।

» हरगोबिन का नया संकल्प और मानवीय संवेदना की विजय

प्रश्न 37 (आसान). हरगोबिन ने जलालगढ़ में संदेश क्यों नहीं सुनाया?
उत्तर – बड़ी बहुरिया की इज़्ज़त बचाने के लिए और उनके दुख को और न बढ़ाने के लिए।

प्रश्न 38 (आसान). हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया से क्या वादा किया?
उत्तर – कि वह उन्हें गाँव छोड़कर नहीं जाने देगा और खुद उनकी सेवा करेगा।

प्रश्न 39 (मध्यम). हरगोबिन के इस संकल्प में किस मानवीय भावना की जीत दिखाई देती है?
उत्तर – उसके इस संकल्प में मानवीय संवेदना, दया, इज़्ज़त की रक्षा और निस्वार्थ सेवा भावना की जीत दिखाई देती है।

प्रश्न 40 (कठिन). हरगोबिन का यह नया संकल्प 'संवदिया' के पारंपरिक काम से किस प्रकार अलग था?
उत्तर – पारंपरिक संवदिया केवल संदेश पहुँचाता है, भावों से ज़्यादा बंधा नहीं होता। हरगोबिन का संकल्प उसके व्यक्तिगत भावना से प्रेरित था, जहाँ उसने संदेश की मर्यादा और मानवीय सम्मान को अपने कर्तव्य से ऊपर रखा, जो एक पारंपरिक संवदिया के लिए असामान्य था। उसने केवल संदेश नहीं पहुँचाया, बल्कि एक संबंध की ज़िम्मेदारी निभाई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म कब और कहाँ हुआ था? उन्होंने किस प्रमुख आंदोलन में भाग लिया था?

› सबसे पहले, हम उनका जन्म वर्ष देखेंगे। वे 1921 में जन्मे थे।
› फिर, जन्मस्थान – उनका जन्म बिहार के पूर्णिया ज़िले के औराही हिंगना गाँव में हुआ था।
› इसके बाद, उनकी भूमिका – उन्होंने 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था।
› साथ ही, नेपाल के राणाशाही विरोधी आंदोलन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

उत्तर – फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 1921 में बिहार के पूर्णिया ज़िले के औराही हिंगना गाँव में हुआ था। उन्होंने 1942 के 'भारत छोड़ो' स्वाधीनता आंदोलन और नेपाल के राणाशाही विरोधी आंदोलन में भाग लिया था।

उदाहरण 2. रेणु जी की किस लेखन शैली ने उन्हें एक 'आंचलिक कथाकार' के रूप में पहचान दी?

› पहला, रेणु जी ने अपनी कहानियों का आधार किसी बड़े शहर को नहीं, बल्कि बिहार के ग्रामीण 'अंचल' (इलाके) को बनाया।

› दूसरा, उन्होंने सिर्फ घटनाएँ नहीं बताईं, बल्कि उस अंचल के लोगों के 'रहना-सहना', 'बोली-भाषा', 'रीति-रिवाज' और 'संस्कृति' को गहराई से दिखाया।

› तीसरा, उन्होंने अपनी कहानियों में वहीं के 'स्थानीय शब्दों' और 'मुहावरों' का इस्तेमाल किया, जिससे कहानियाँ और भी 'प्रामाणिक' और 'सजीव' लगीं।

› आखिर में, उन्होंने उस अंचल के 'आम लोगों' के 'सुख-दुख', 'संघर्ष' और 'भावनाओं' को इतनी संवेदनशीलता से चित्रित किया कि पाठक खुद को वहीं महसूस करने लगता है।

उत्तर – रेणु जी की 'अंचल विशेष पर आधारित रचनाएँ', 'स्थानीय भाषा व मुहावरों का प्रयोग', और 'ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी एवं संवेदनशील चित्रण' ही उनकी आंचलिक कथाकार वाली लेखन शैली की मुख्य पहचान है।

उदाहरण 3. प्रश्न: फणीश्वरनाथ 'रेणु' के दो प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखिए और समझाइए कि उन्होंने प्रेमचंद की विरासत को कैसे आगे बढ़ाया?

› स्टेप 1: पहले हम उनके दो प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखेंगे: 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा'।

› स्टेप 2: फिर हम बताएंगे कि प्रेमचंद जी ने गाँवों और आम आदमी की समस्याओं पर लिखना शुरू किया था, जिसे 'प्रेमचंद परंपरा' कहते हैं।

› स्टेप 3: रेणु जी ने उसी परंपरा को अपनी आंचलिकता (यानी एक ख़ास क्षेत्र के जीवन का चित्रण) और स्थानीय भाषा के साथ एक नई दिशा दी। उन्होंने ग्रामीण जीवन को और भी ज़्यादा बारीकी से, उसकी अपनी बोली और संस्कृति के साथ दिखाया, जिससे प्रेमचंद की परंपरा को एक नई 'पहचान' और 'भंगिमा' मिली।

उत्तर – फणीश्वरनाथ 'रेणु' के दो प्रमुख उपन्यास 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' हैं। उन्होंने प्रेमचंद की ग्रामीण जीवन और जन-साधारण की समस्याओं पर आधारित लेखन परंपरा को अपनी आंचलिकता, स्थानीय भाषा के प्रयोग और सजीव चित्रण से एक नई पहचान और आधुनिक भंगिमा प्रदान की।

उदाहरण 4. रेणु जी ने 'संवदिया' कहानी में मानवीय संवेदना को कैसे प्रस्तुत किया है?

› पहले हम कहानी के मुख्य पात्र 'बड़ी बहुरिया' के बारे में सोचेंगे। वह एक अकेली, बेसहारा, दुखी नारी है।

› फिर हम देखेंगे कि 'संवदिया हरगोबिन' उस तक कैसे पहुँचता है और उसका संदेश क्या है। संदेश सिर्फ सूचना नहीं, बल्कि उसका दर्द है।

› रेणु जी ने बड़ी बहुरिया के भीतर के हाहाकार, यानी उसके अंदर के तूफान को शब्दों में पिरोया है।

› इस तरह, संवदिया के माध्यम से रेणु जी ने उस अकेली, असहाय नारी के दुख को न केवल दिखाया, बल्कि पाठकों के मन तक पहुँचाया, यही मानवीय संवेदना की प्रस्तुति है।

उत्तर – 'संवदिया' कहानी में रेणु जी ने 'बड़ी बहुरिया' नाम की एक असहाय नारी के गहरे आंतरिक दुख और करुणा को 'संवदिया हरगोबिन' के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक उसके दर्द को महसूस कर पाते हैं। यह मानवीय संवेदना की गहन पहचान को दर्शाता है।

उदाहरण 5. हरगोबिन संवदिया को गाँववाले क्या समझते थे और हरगोबिन बाकी संवदियाओं से किस प्रकार भिन्न था?

› पहले बताओ कि गाँववाले संवदिया को 'निठल्ला' और 'कामचोर' मानते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि यह सिर्फ चिट्ठियाँ पहुँचाने का आसान काम है।

› फिर समझाओ कि हरगोबिन सिर्फ एक संदेशवाहक नहीं था। वो संदेश के पीछे की भावनाओं को, उसके महत्व को समझता था।

› उदाहरण दो कि वह किसी भी घर का माहौल 'सूंघकर' ही संदेश का अंदाज़ा लगा लेता था, जैसे बड़ी बहुरिया के गुप्त संदेश का।

उत्तर – गाँववाले हरगोबिन को अक्सर निठल्ला और कामचोर समझते थे। लेकिन हरगोबिन बाकियों से इसलिए अलग था क्योंकि वह केवल एक संदेशवाहक नहीं था, बल्कि वह संदेशों के पीछे की मानवीय भावनाओं को समझता और उन्हें सजीवता से दूसरे तक पहुँचाता था। वह वातावरण को भाँपकर संदेश की प्रकृति का अनुमान लगा लेता था।

उदाहरण 6. बड़ी हवेली की दुर्दशा के मुख्य कारण क्या थे और इसका बड़ी बहुरिया पर क्या प्रभाव पड़ा?

› पहला कारण था बड़े भैया का असमय निधन। उनके बाद घर को संभालने वाला कोई नहीं बचा।

› दूसरा कारण था तीनों देवरों का आपस में लड़ना-झगड़ना और फिर गाँव छोड़कर शहर चले जाना। उन्होंने बड़ी बहुरिया को अकेला छोड़ दिया।

› तीसरा कारण था ज़मीन-जायदाद का बँटवारा और रैयतों द्वारा ज़मीन पर कब्ज़ा कर लेना, जिससे आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई।

› इन सबका बड़ी बहुरिया पर यह प्रभाव पड़ा कि वह पूरी तरह अकेली और असहाय हो गई। उसे आर्थिक तंगी का

सामना करना पड़ा और उसे वह काम करने पड़े जो उसने कभी सोचे भी नहीं थे, जैसे अनाज फटकना। उसकी मानसिक पीड़ा बहुत बढ़ गई।

उत्तर – बड़ी हवेली की दुर्दशा का मुख्य कारण बड़े भैया की मृत्यु, देवरों का अलगाव और ज़मीन-जायदाद का नष्ट होना था, जिसने बड़ी बहुरिया को अकेला, आर्थिक रूप से तंग और मानसिक रूप से पीड़ित कर दिया।

उदाहरण 7. बड़ी बहुरिया ने अपनी माँ को हरगोबिन के माध्यम से क्या संदेश भेजा?

› पहला कदम: बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को बुलाया और अपनी सारी व्यथा सुनाई।

› दूसरा कदम: उसने माँ से कहने को कहा कि वह अब भाई-भाभियों की नौकरी करके और बच्चों की जूठन खाकर भी पेट पाल लेगी, पर इस घर में नहीं रह सकती।

› तीसरा कदम: उसने कहा कि अगर माँ उसे यहाँ से नहीं ले जाती, तो वह गले में घड़ा बांधकर तालाब में डूब मरेगी।

› चौथा कदम: उसने अपनी निराशा व्यक्त करते हुए पूछा कि आखिर वह कब तक और किसके लिए बथुआ-साग खाकर जिए?

› पांचवां कदम: उसने हरगोबिन को राह-खर्च के लिए पाँच रुपए का फटा नोट दिया और उम्मीद जताई कि भैया उसे लेने ज़रूर आएंगे।

उत्तर – बड़ी बहुरिया ने अपनी माँ को अपनी बेबसी, अपमान और जीवन समाप्त करने की इच्छा का मार्मिक संदेश भेजा, जिसमें उसने घर छोड़ने और आत्महत्या तक की बात कही।

उदाहरण 8. हरगोबिन को बड़ी बहुरिया के संवाद को पहुँचाने में किस प्रकार का आंतरिक द्वंद्व अनुभव हुआ?

› पहले यह समझो कि 'संवदिया का धर्म' क्या है - यह अपने मालिक का संदेश बिना बदले, ईमानदारी से पहुँचाना है।

› अब देखो 'बड़ी बहुरिया का संवाद' क्या था - वह अपने दुख और अकेलेपन का संदेश था, जिसमें गाँव छोड़ने की धमकी भी थी।

› हरगोबिन का भावनात्मक जुड़ाव - उसे बड़ी बहुरिया का दुख महसूस हुआ, उसके शब्द कांटे की तरह चुभे।

› गाँव के मान-सम्मान की चिंता - उसे लगा कि अगर बड़ी बहुरिया गाँव छोड़कर चली गई, तो गाँव की बदनामी होगी।

› निष्कर्ष - संवदिया के धर्म (संदेश पहुँचाना) और मानवीय संवेदना (बड़ी बहुरिया व गाँव का मान) के बीच संघर्ष ही उसका आंतरिक द्वंद्व था।

उत्तर – हरगोबिन को संवदिया के रूप में अपना कर्तव्य (बड़ी बहुरिया का दुख भरा संदेश हूबहू पहुँचाना) और बड़ी बहुरिया की पीड़ा तथा गाँव के मान-सम्मान को बचाने की मानवीय संवेदना के बीच गहरा आंतरिक द्वंद्व अनुभव हुआ। वह संदेश सुनाकर बड़ी बहुरिया को गाँव छुड़वाना नहीं चाहता था, पर एक संवदिया के रूप में झूठ भी नहीं बोल सकता था।

उदाहरण 9. हरगोबिन को जब बड़ी बहुरिया का संदेश उसकी माँ को सुनाना था, तो उसने अंततः क्या कहा?

› सबसे पहले, हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की माँ के सामने सीधे-सीधे कहा, 'जी नहीं, कोई संवाद नहीं।'

› फिर उसने एक मनगढ़ंत कहानी बनाई कि बड़ी बहुरिया ने कहा है कि अगर छुट्टी मिली तो दशहरे में गंगाजी के मेले में आकर माँ से मिलेंगी।

› इस पर बड़ी बहुरिया की माँ ने जब बड़ी बहुरिया की अकेली और मुश्किल हालत का ज़िक्र किया, तो हरगोबिन ने फिर से झूठ बोला कि 'नहीं मायजी! ज़मीन-जायदाद अभी भी कुछ कम नहीं।', और उसने बड़ी बहुरिया को 'गाँव की लक्ष्मी' बताया जिसे गाँव छोड़कर शहर नहीं जाना चाहिए।

› अंत में, उसने बड़ी बहुरिया का वास्तविक दर्द छिपाकर माँ को सिर्फ़ झूठे दिलासे दिए और यह भी कहा कि वो दशहरे में बड़ी बहुरिया के साथ ही वापस आएगा।

उत्तर – हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की माँ को कोई भी दुखद संदेश नहीं सुनाया, बल्कि झूठे कुशल-मंगल बताए और बड़ी बहुरिया को 'गाँव की लक्ष्मी' कहकर गाँव छोड़कर न जाने की बात की।

उदाहरण 10. जलालगढ़ पहुँचने के बाद हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया के सामने क्या संकल्प लिया और क्यों?

› हरगोबिन ने महसूस किया कि बड़ी बहुरिया का संदेश सुनाना उनकी इज़्ज़त और आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाएगा। वह यह बात किसी और के सामने कहकर उन्हें और दुखी नहीं करना चाहता था।

› उसने सोचा कि बड़ी बहुरिया सिर्फ़ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरे गाँव की 'माँ' के समान हैं, जिनकी सेवा करना सबका कर्तव्य है।

› इसी मानवीय संवेदना के कारण हरगोबिन ने जलालगढ़ में ही यह संकल्प लिया कि वह बड़ी बहुरिया का संदेश नहीं सुनाएगा।

› वापस आकर उसने बड़ी बहुरिया का पैर पकड़कर उनसे माफ़ी माँगी और कहा कि वह उन्हें गाँव छोड़कर नहीं जाने देगा, और खुद उनकी सेवा करेगा, उनका बेटा बनकर।

› उसने यह भी संकल्प लिया कि वह निठल्ला नहीं बैठेगा, बल्कि उनका सारा काम करेगा और उन्हें कोई कष्ट नहीं होने देगा।

उत्तर – हरगोबिन ने जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने यह संकल्प लिया कि वह उनका संदेश किसी को नहीं बताएगा और उन्हें गाँव छोड़कर नहीं जाने देगा। वह खुद उनका बेटा बनकर उनकी सेवा करेगा और उन्हें कोई कष्ट नहीं होने देगा, क्योंकि उसे बड़ी बहुरिया के सम्मान और उनकी दुखभरी मानवीय स्थिति का गहरा एहसास हुआ था।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- यह परिचय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3-4 अंकों के लिए पूछा जाता है, जिसमें जन्मस्थान, वर्ष, और आंदोलनों में भूमिका प्रमुख होती है।
- बोर्ड परीक्षा में 'आंचलिक कथाकार' पर सवाल अक्सर पूछा जाता है। ध्यान रखना कि 'आंचल' का अर्थ और रेणु जी ने कैसे स्थानीय भाषा का प्रयोग किया, ये मुख्य बिंदु हैं।
- यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि 'संवदिया' कहानी का मूल संदेश या केंद्रीय भाव क्या है। कहानी की घटनाओं के साथ-साथ 'मानवीय संवेदना' और 'नारी मन की पीड़ा' पर ज़रूर ज़ोर देना।
- यह भाग कहानी का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ है, बेटा! बोर्ड परीक्षा में हरगोबिन के चरित्र-चित्रण और मानवीय संवेदना के प्रश्न अक्सर यहीं से आते हैं। इस पर ध्यान देना।

एक नज़र में रिवीज़न

› रेणु: जन्म बिहार, 1921, 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भागीदारी, प्रगतिशील विचारक।

› रेणु: आंचलिक कथाकार, विशेष क्षेत्र, स्थानीय भाषा, मुहावरे, सजीव चित्रण।

› संवदिया: मानवीय संवेदना, असहाय नारी पीड़ा, रेणु 'आत्मा के शिल्पी'।

› हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की इज़्ज़त बचाने और सेवा करने का संकल्प लिया।